योगवासिष्ठः

(महारामायणम्)

भाषानुवादकारः
श्रीकृष्ण पन्त शास्त्री

सम्पादकौ
श्रीकृष्ण पन्त शास्त्री
मूलशङ्कर शास्त्री

भूमिकालेखकः संशोधकश्च
मदन मोहन अग्रवाल

।। श्रीः ।।

चौखम्बा सुरभारती ग्रन्थमाला

521

योगवासिष्ठः

(महारामायणम्)

हिन्दीभाषानुवादसहितः

विस्तृतविषयानुक्रमणिका–समीक्षात्मकभूमिका–श्लोकानुक्रमणीयुतश्च

(भाग-तीन)

University Department of Yoga RU
No/PGDY/ 264
Library

हिन्दीभाषानुवादकारः

पण्डित श्रीकृष्ण पन्त शास्त्री

अध्यक्ष, अच्युतग्रन्थमाला, काशी

*

मूलसम्पादकौ

पण्डित श्रीकृष्ण पन्त शास्त्री

पण्डित मूलशङ्कर शास्त्री

*

भूमिकालेखकः ग्रन्थसंशोधकश्च

प्रोफेसर मदन मोहन अग्रवाल

एम.ए., पी-एच्.डी., डी.लिट्

दिल्ली विश्वविद्यालय, दिल्ली

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन

वाराणसी

विषयानुक्रमणिका

निर्वाणप्रकरणम् (उत्तरार्द्धम्)

(पृष्ठ 1991–2936)

1. ममता, अहङ्कार एवं सङ्कल्प-विकल्प से रहित जीवन्मुक्त पुरुष जैसा जीवनयापन और आचरण करते हैं वैसा निर्वचन करने के लिए युक्ति का कथन 1991
2. सम्पूर्ण जगत् में शिवमयरूपता बतलाने के बाद कर्म के बीज का अन्वेषण करके उसका समूल निवारण किया जाता है, यह वर्णन 1995
3. द्वैत का अत्यन्त बाध हो जाने पर विद्वानों को जिस उपाय से आत्मतत्त्व अवेदनरूप और निष्क्रिय सिद्ध होता है, उस उपाय का वर्णन 2001
4. अहन्ता ही संसार की मूल है, इसका आत्मबोध से अनहंभाव की भावना करने पर त्याग हो जाता है, यह वर्णन 2005
5. जितेन्द्रिय पुरुषों में ही शास्त्रों का उपदेश सफल होता है, अजितेन्द्रियों में नहीं, इस विषय में भुशुण्ड द्वारा कथित विद्याधर कथा का वसिष्ठजी द्वारा वर्णन 2011
6. चिरकाल तक दिव्य भोग को भोगे हुए विद्याधर के द्वारा परीक्षित विषयों में उन्मुख इन्द्रियों की नीति का वर्णन 2013
7. ब्रह्म की ही सत्ता है, जगत-रूपी दुःख की सत्ता है ही नहीं, यह सारा जगत् अज्ञान के कारण प्रतीत हुआ है तथा अहङ्काररूपी बीज से यह जगद्रूपी वृक्ष उत्पन्न हुआ है–इन सबका वर्णन 2019
8. इस संसाररूपी वृक्ष का ज्ञान से उच्छेद तथा यह संसार सङ्कल्पमण्डप के सदृश है, इसका वर्णन 2021
9. चिति के अधीन जगत् का उदय, ध्वंस, सत्ता, स्फूर्ति, तथा परिवर्तन है और यह सारा विश्व चिन्मात्र चिति का स्फुरण है–यह वर्णन 2024
10. निर्विकार और कारणशून्य ब्रह्म ही यह सब स्थित है, यह जगत् कभी कहीं नहीं था, यह वर्णन 2026
11. इन्द्रियों को जीतकर पूर्ण ब्रह्म परमात्मा में मन की स्थिति तथा देह आदि दृश्य पदार्थों में अनात्मभावना दृढ़ करनी चाहिए, यह वर्णन 2028
12. अहंभाव भ्रान्तिमात्र है, जगत् का भ्रम चिति का विवर्त है, उसकी मूल अविद्या है तथा अविद्या के नाश का क्रम क्या है–इन सबका वर्णन 2031
13. माया के कार्य में देश आदि की अपेक्षा का अभाव तथा परमाणु के उदर में इन्द्र के राज्य की कल्पना का विस्तार–यह वर्णन 2036
14. उस कुल में उत्पन्न इन्द्र की बिसतन्तु में जगत् की रचना तथा सब तरह के विचार कर देखने पर ब्रह्मदृष्टि में आकाश की इन्द्रता का वर्णन 2039
15. जगत् की भ्रान्ति का बीज तथा स्वरूप अहंभाव है, इसके परिमार्जन से जगत् के अभाव द्वारा शुद्ध परमात्मा के शेष रह जाने से कृतार्थता सिद्ध हो जाती है, या वर्णन 2041
16. इस उपदेश को सुनकर विद्याधर की समाधि में लीनता तथा अनहंभाव की प्रशंसा द्वारा कथा की समाप्ति का वर्णन 2044
17. अनहंभावरूप अग्नि से अहंभावरूप बीज के दग्ध हो जाने पर देहादिसंसार का पूर्णरूप से बाध हो जाने के बाद यह संसार बिलकुल मिथ्या भासने लगता है, यह वर्णन 2045
18. सर्वत्र आकाश में पवन द्वारा उड़ाये जा रहे मृत जीव के मन में स्थित अनन्त जगत् का वर्णन 2047

19. जीव का स्वरूप, उसका तत्त्व, समष्टि–व्यष्टि शरीरों की कल्पना तथा स्थान एवं करणों की भिन्नता से भोगभेद–इन सबका वर्णन 2054

20. वासना, कर्म और इच्छा के अनुसार सङ्कल्पों के सर्जन से व्यष्टि–जीवों की समष्टि के साथ समता का वर्णन 2058

21. शुभ और अशुभ दो तरह की ज्ञानबन्धुता है, इनमें शुभ ग्राह्य है और अशुभ हेय है, इसका यत्नपूर्वक लक्षणों द्वारा वर्णन 2061

22. सबसे पहले अनेक युक्ति–प्रयुक्तियों से ज्ञानियों के लक्षणों का वर्णन तथा प्रसङ्ग से जीव, जगत् और ब्रह्म के स्वरूप का वर्णन 2062

23. मरुभूमि के महावन में महाराज वसिष्ठ के साथ मङ्कि नामक ब्राह्मण का समागम तथा वैराग्य आ जाने से तत्त्वजिज्ञासु हुए उसका उपदेश, यह वर्णन 2071

24. देह, इन्द्रिय, मन तथा बुद्धि आदि के दोषों के सहित सांसारिक अपने दुःखसमूह का मङ्कि द्वारा वर्णन 2075

25. अविद्या से उत्पन्न संवेदन आदि चार संसार के बीज हैं और परमात्मा का तत्त्वज्ञान ही संसार और उन बीजों का विनाशक है, यह वर्णन 2078

26. भावनाजनित रागादि दोषों से अनर्थों का आना तथा विवेकजनित तत्त्वज्ञान से रागादि दोषों के विनाश द्वारा उनका निकल जाना–यह वर्णन 2082

27. चित्त का स्पन्दन होने पर आत्मा में स्पन्दन का भ्रम हो जाता है, इससे जगत् की सारी विभूतियाँ उत्पन्न होती हैं, चित्त की शान्ति से आत्मा में स्पन्दनभ्रम की शान्ति होती है और इससे अपने असली स्वरूप में अवस्थान होता है–यह वर्णन 2087

28. बीजरूप और कार्यरूप तथा जन्म के हेतुभूत पुरुषकर्मों के, जो अदृष्टरूप निमित्त से सम्बद्ध हैं, स्वरूप का पुनः वर्णन 2089

29. व्यवहारकाल में जो भी कुछ कर्तव्य आ जाए उसे निभाते हुए अपने स्वरूप में सदा स्थिर रहना चाहिए, यों रामजी के प्रति महाराज वसिष्ठजी का उपदेश] 2093

30. जिस दृष्टि से अविद्याजनित नानात्वभ्रान्ति की शान्ति द्वारा धीर पुरुष परमब्रह्म में स्थिर हो जाता है, उस दृष्टि से वर्णन 2102

31. अचिद्रूप वस्तु असत् हो या सत्, सभी चिति से ग्रस्त है, इसलिए कुछ भी नष्ट नहीं होता, इस विषय में निर्वाण की स्थिति का वर्णन 2105

32. साधुओं के समागम और सत् शास्त्रों का विचार करने वाले पुरुष को मोक्ष अवश्य ही होता है, इसलिए मोक्ष स्वाधीन है, इसका युक्तिपूर्वक कथन 2110

33. संवित् की बाह्यमुखता के वारण से भ्रान्तिरूप कल्पना की प्रतिकल्पना (भ्रान्तिकल्पना के निवर्तक शास्त्रीय उपाय) और परलोक की चिकित्सा का वर्णन 2114

34. दृष्ट पदार्थों की सृष्टि ही जगत् है, यह जगत् अदर्शन से ही नष्ट हो जाता है, इस प्रस्तुत विषय में युक्तियों का वर्णन 2118

35. प्रपञ्चसहित तथा प्रपञ्चरहित ब्रह्मतत्त्व की अखण्ड एक दृष्टि के लिए सत्य और असत्य दोनों तरह से भासमान ब्रह्म के स्वरूप का विस्तारपूर्वक वर्णन 2123

36. इच्छारहित तुच्छ पुरुष का भोग बन्धन के लिए नहीं होता, एकमात्र इच्छा ही बन्धन है तथा इसका त्याग मुक्ति है, इन सबका वर्णन 2128

37. भोगों की इच्छा जिससे उत्पन्न ही न हो या उत्पन्न होने पर भी वह केवल ब्रह्मरूप ही समझी जाए, उस ज्ञानयोग का युक्तियों से वर्णन 2132

38. चित् और चेत्य (विषय)–दोनों के सम्बन्धभ्रम के निरास द्वारा उत्तम युक्तियों से चेतन ही जगत् है–यह वर्णन 2141

39. प्रबुद्ध आत्मा में विश्रान्त तत्त्वज्ञानी का जो स्वरूप रहता है उसका तथा जगत् जिस रूप का रहता है, उसका वर्णन 2146

40. न तो संसारदशा में ब्रह्म का भान होता है और न ब्रह्मदशा में संसार का ही भान होता है, परन्तु जीवन्मुक्ति में क्रमशः दोनों का भान होता है, यह वर्णन 2151

41. अविद्या के स्वभाव से त्रिलोकरूपी कठपुतली के नृत्य तथा एकमात्र आत्मस्वभाव से निर्वाण की प्राप्ति का वर्णन 2153

42. पुनः विश्व और विश्वेश्वर की एकता का विस्तारपूर्वक वर्णन तथा स्वात्मभूत परमेश्वर ही विवेक द्वारा पूजनीय हैं, यह कथन 2155

योगवासिष्ठ वेदान्तशास्त्र के मुख्य प्रमाणित ग्रन्थ प्रस्थानत्रयी = उपनिषद्, ब्रह्मसूत्र और गीतादि में एक संस्कृत भाषा का बृहत् ग्रन्थ है। बृहद् योगवासिष्ठ में लगभग बत्तीस हजार (३२०००) या तैंतीस हजार (३३०००) श्लोक हैं। यह ग्रन्थ योगवासिष्ठमहारामायण, महारामायण, आर्षरामायण, वासिष्ठरामायण, ज्ञानवासिष्ठ और वासिष्ठ आदि नामों से भी ज्ञात है। यह ग्रन्थ अत्यन्त आदरणीय है, क्योंकि इसमें किसी सम्प्रदायविशेष का उल्लेख नहीं है। भारत के एक कोने से दूसरे कोने तक इसका पाठ, मूल तथा भाषानुवाद में, चिरकाल से होता चला आ रहा है। जो महत्त्व भगवद् भक्तों के लिए भागवतपुराण और रामचरितमानस का है, तथा कर्मयोगियों के लिए भगवद्गीता का है, वही महत्त्व ज्ञानियों के लिए योगवासिष्ठ का है। सहस्त्रों स्त्री-पुरुष–राजा से रङ्क तक–इस अद्भुत ग्रन्थ के अध्ययन से प्रतिदिन के जीवन में आनन्द और शान्ति प्राप्त करते रहे हैं। इस ग्रन्थ में प्रायः सभी प्रकार के पाठकों के अनुयोग के लिए सामग्री प्रस्तुत है। जहाँ अबोध बालक भी इसकी कहानियाँ सुनकर प्रसन्न होते हैं, वहा बड़े-बड़े विद्वानों के लिए गहनतम दार्शनिक सिद्धान्तों का इसमें प्रतिपादन है। ऐसा कोई भी प्रश्न नहीं है, जिसका समाधान इसमें प्राप्त न हो। यह ऐसा अद्भुत ग्रन्थ है कि इसमें काव्य, उपाख्यान तथा दर्शन—सभी का आनन्द वर्तमान है। यह सब श्रुतियों का सार एवं माण्डूक्यकारिका का वार्तिक = व्याख्यान ग्रन्थ है। महर्षि वसिष्ठ ने स्वयं कहा है—**यदिहास्ति तदन्यत्र यन्नेहास्ति न तत्क्वचित् । इमं समस्तविज्ञानशास्त्रकोशं विदुर्बुधाः ।।**

योगवासिष्ठ के प्रस्तुत संस्करण में संस्कृत के प्रत्येक श्लोकों की अत्यन्त सरल हिन्दी भाषा में सुन्दर विवेचना की गई है, जो इसकी प्रमुख विशेषता है। कोई भी व्यक्ति, जो संस्कृत से सर्वथा अपरिचित है, इसका सरलतापूर्वक अध्ययन कर योगवासिष्ठ के गूढ़दार्शनिक स्थलों को हृदयंगम कर सकेगा और उसको मुक्तिलाभ के लिए अन्य साधनों की अपेक्षा नहीं होगी। मोक्षप्राप्ति के उपाय ढूँढने की चेष्टा में व्यक्ति को आत्मानुभव होता है। इस ग्रन्थ के अध्ययन से व्यक्ति के सम्पूर्ण क्लेशों-दुःखों का अन्त होकर उसके हृदय में अपूर्व शान्ति प्राप्त होगी। अध्ययनार्थी सांसारिक सुख-दुःख की परिधि से बाहर निकलकर परम आनन्द का अनुभव करेगा। मनोयोगपूर्वक अध्ययन करनेवाले निश्चय ही इस जीवन में ब्रह्मज्ञान कर मुक्ति को प्राप्त करेंगे। यह ग्रन्थ ज्ञान का भण्डार है। वेदान्त के ग्रन्थों में यह चमकता हुआ रत्न है। मुमुक्षु के लिए यह ग्रन्थ नित्य स्वाध्याय-योग्य है। ग्रन्थ की मौलिक उपादेयता की दृष्टि से आशा की जा सकती है कि वेदान्त के सच्चे जिज्ञासुओं में इसका विशेष प्रचार-प्रसार होगा।

- **देवीपुराणम्।** हिन्दी टीका सहित। श्री एस.एन. खण्डेलवाल
- **श्रीविष्णुमहापुराणम्।** हिन्दीटीका-श्लोकानुक्रमणी सहित। टीकाकार–श्री एस. एन. खण्डेलवाल
- **श्रीसाम्बपुराणम्।** हिन्दी टीका सहित। श्री एस. एन. खण्डेलवाल
- **सौरपुराणम् (सूर्यपुराणम्)।** हिन्दी टीका सहित। श्री एस. एन. खण्डेलवाल
- **श्रीवराह पुराणम्।** हिन्दीटीका-श्लोकानुक्रमणी सहित। टीकाकार–श्री एस. एन. खण्डेलवाल
- **श्रीपद्ममहापुराणम्।** (1-7 भाग) हिन्दीटीका-श्लोकानुक्रमणी सहित। टीकाकार–श्रीशिवप्रसाद द्विवेदी
- **श्रीविष्णुधर्मोत्तरमहापुराणम्।** (1-3 भाग) हिन्दीटीका-श्लोकानुक्रमणी सहित। टीकाकार–श्रीशिवप्रसाद द्विवेदी

ISBN : 978-93-85005-34-3

9 789385 005343

चौखम्बा सुरभारती प्रकाशन
वाराणसी-221001
csp_naveen@yahoo.co.in